

३८. ब्रह्मणः कथा

नत्वा जिनं जगत्पूज्यमाद्यब्रह्माणमद्भुतम्। ब्रह्मेति देवपुत्रोसौ वक्ष्येऽहं लौकिकीं कथाम् ॥१॥
 एवं मूढाः प्रजल्पन्ति ब्रह्मासावेकदामुदा। इन्द्रादीनां पदं जित्वा सर्वोत्कृष्टो भवाम्यहम् ॥२॥
 इत्यास्थया महाटव्यामूर्द्धबाहुः प्रकष्टतः। देवतार्द्धचतुर्वर्षसहस्राणि महातपः ॥३॥
 कुर्वन्नेकपदेनोच्चैर्भुञ्जानः पवनं स्थितः। तपःशक्त्या तदेन्द्रादेर्जातमासनकम्पनम् ॥४॥
 इन्द्रनागेन्द्ररुद्राद्याः स्वराजक्षयभीतितः। अप्सरोरूपमादाय कृत्वा देवीं तिलोत्तमाम् ॥५॥
 नाना गन्धर्वसद्गान-पेटकाद्यैः समन्विताम्। तत्पाश्वे प्रेषयामासुः सत्तपःक्षयहेतवे ॥६॥
 सापि स्वर्गात्समागत्य तत्ससीपे सुरांगना। हावैर्भावैर्विलासाद्यैः संचक्रे नर्तनं महत् ॥७॥
 सोपि तद्रूपसंसक्तो भूत्वा ब्रह्मा स्वमानसे। प्रोत्फुल्ललोचनस्तां च पश्यति स्म स्मरोहतः ॥८॥
 तच्चित्तं सा परिज्ञात्वा विद्धं कन्दर्पसायकैः। ब्रह्मणो वामपाश्वे च गत्वा नृत्यं चकार च ॥९॥
 दिव्यवर्षसहस्रोत्थतपसा दारुणेन च। तत्रापि वामपाश्वेऽसौ चक्रे वक्त्रं द्वितीयकम् ॥१०॥

३८. लौकिक ब्रह्मा की कथा

संसार के द्वारा पूजे गए भगवान् आदि ब्रह्मा (आदिनाथ स्वामी) को नमस्कार कर, देवपुत्र ब्रह्मा की कथा लिखी जाती है ॥१॥

कुछ असमझ लोग ऐसा कहते हैं कि एक दिन ब्रह्माजी के मन में आया कि मैं इन्द्रादिक का पद छीनकर सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ और इसके लिए उन्होंने एक भयंकर वन में हाथ ऊँचा किए बड़ी घोर तपस्या की। वे कोई साढ़े चार हजार वर्ष पर्यन्त (यह वर्ष संख्या देवों के वर्ष के हिसाब से हैं, जो कि मनुष्यों के वर्षों से कई गुणी होती है।) एक ही पाँव से खड़े होकर तप करते रहे और केवल वायु का आहार करते रहे। ब्रह्माजी की यह कठिन तपस्या निष्फल न गई इन्द्रादि का आसन हिल गया। उन्हें अपने राज्य नष्ट होने का बड़ा भय हुआ। तब उन्होंने ब्रह्माजी का तप भ्रष्ट करने के लिए स्वर्ग की एक तिलोत्तमा नाम की वेश्या को, जो कि गन्धर्व देवों के समान गाने और बड़ी सुन्दर नाचने वाली थी, भेजा। तिलोत्तमा उनके पास आई और अनेक प्रकार के हाव-भाव विलास बतला-बतलाकर नाचने लगी। तिलोत्तमा का नृत्य, तिलोत्तमा की भुवन मनोहारिणी रूपराशि और उसका हाव-भाव-विलास देखकर ब्रह्माजी तपसे डगमगे। उन्होंने हजारों वर्षों की तपस्या को एक क्षण भर में नष्ट कर अपने को काम के हाथ सौंप दिया। वे आँखें फाड़-फाड़कर तिलोत्तमा की रूप राशि को बड़े चाव से देखने लगे। तिलोत्तमा ने जब देखा कि हाँ योगिराज अब अपने आपमें नहीं है और आँखें फाड़-फाड़कर मेरी ही ओर देख रहे हैं, तब उनकी इच्छा को और जागृत करने के लिए वह उनकी बायीं ओर आकर नाचने लगी। ब्रह्मा जी ने तब अपनी हजारों वर्षों की तपस्या के प्रभाव से अपना दूसरा मुँह बाँयी ओर बना लिया। तिलोत्तमा जब उनकी पीठ पीछे आकर नाचने लगी। ब्रह्माजी ने तब तीसरा मुँह पीछे की ओर बना लिया ॥२-१०॥

एवं क्रमात्तदासक्तो जातोसौ चतुराननः। ऊर्ध्वं च गर्दभाकारं स्वतुण्डं कृतवान्युनः ॥११॥
 सा नर्त्तकी तपो भ्रष्टं तं विधायेति धूर्त्तिका। स्वर्गं गत्वा सुरेन्द्राणां नत्वा तद्वृत्तकं जगौ ॥१२॥
 भो स्वामिनः सुखं नित्यं यूयं तिष्ठथ लीलया। कन्दर्पमूर्च्छितो ब्रह्मा सम्पपात महीतले ॥१३॥
 इन्द्रेणोक्तं तदाकर्ण्य तत्र किं त्वं स्थिता न हि। सा जगादिति भो देव वृद्धोसौ नैव रोचते ॥१४॥
 ततः कारुण्यभावेन देवेन्द्रेण महाधिया। उर्वशी प्रेषिता वेश्या तत्समीपे मनोहरा ॥१५॥
 सापि तत्र समागत्य शक्रादेशेन भक्तितः। कृत्वा तत्पादसंस्पर्शं चक्रे तं च सचेतनम् ॥१६॥
 तदा तामुर्वशीं प्राप्य गृहं कृत्वा निजेच्छया। नाना भोगान्प्रभुञ्जानः स ब्रह्मा लौकिकः स्थितः ॥१७॥
 अहो मूढा न जानन्ति देवं देवस्वरूपकम्। जल्पन्ति मत्तवन्नित्यं स्वेच्छया सत्यवर्जितम् ॥१८॥
 इन्द्रादीनां पदं दिव्यं गृह्यते केन तद्धठात्। किं दुराचारमित्युच्चैः कुर्वन्ति सुरयोषितः ॥१९॥
 यो ब्रह्मा त्रिजगद्देवः किं करोति कुकर्म सः। सर्वमेतदसत्यं हि ज्ञातव्यं नीतिवेदिभिः ॥२०॥

तिलोत्तमा फिर उनकी दाहिनी ओर जाकर नाचने लगी, ब्रह्माजी ने उस ओर भी मुँह बना लिया। अन्त में तिलोत्तमा आकाश में जाकर नाचने लगी। तब ब्रह्माजी ने अपना पाँचवाँ मुँह गधे के मुख के आकार का बनाया। कारण अब उनकी तपस्या का फल बहुत थोड़ा बच रहा था। मतलब यह कि तिलोत्तमा ने जिस प्रकार ब्रह्माजी को नचाया वे उसी प्रकार नाचे। इस प्रकार उन्हें तप से भ्रष्ट कर और उनके हृदय में काम की आग धधका कर चालाक तिलोत्तमा अछूती की अछूती स्वर्ग को चली गई और बेचारे ब्रह्माजी काम के तीव्र वेग से मूर्च्छा खाकर पृथ्वी पर आ गिरे। तिलोत्तमा ने सब हाल इन्द्र से कहकर कहा—प्रभो, अब आप अनन्त काल तक सुख से रहे। मैं ब्रह्माजी की खूब गति बना आई हूँ। तब इन्द्र ने बहुत खुश होकर उससे पूछा—हाँ तिलोत्तमा, तू ब्रह्माजी के पास ठहरी नहीं? तिलोत्तमा बोली—वाह! प्रभो, भली उस बूढ़े की और मेरी आपने जोड़ी मिलाई! मैं तो कभी उसके पास खड़ी तक नहीं रह सकती। यह सुन इन्द्र को ब्रह्माजी की हालत पर बड़ी दया आई उसने फिर सुन्दर वेश्या को उनके पास भेजा। इन्द्र की आज्ञा सिर पर चढ़ा उर्वशी ब्रह्माजी के पास आई उनके पाँवों को छूकर उन्हें उसने सचेत किया। ब्रह्माजी पाँव तले एक स्वर्गीय सुन्दरी को बैठी देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें मानों आज उनकी कड़ी तपस्या का फल मिल गया। ब्रह्माजी अब घर बनाकर उर्वशी के साथ रहने लगे और मनमाने भोग भोगने लगे; तब से लौकिक ब्रह्मा कहलाने लगे ॥११-१७॥

बड़े दुःख की बात है कि असमझ लोग देव या देव के सच्चे स्वरूप को जानते नहीं और जैसी अपनी इच्छा में आता है उन्मत्त की तरह झूठा ही कह दिया करते हैं क्या कोई हठ करके इन्द्रादि का का पद छीन सकता है? और क्या स्वर्ग की देवांगनाएँ व्यभिचार कर सकती हैं? और जो ब्रह्मा तीन लोक का स्वामी देव कहा जाता है वह क्या ऐसा नीच कर्म करेगा? समझदारों को ये बातें झूठी समझना चाहिए और जिसमें ऐसी बातें हैं वह कभी ब्रह्मा नहीं हो सकता। जैन शास्त्रों में ब्रह्मा उसे कहा है, जो मोक्षमार्ग का बताने वाला, सच्चे ज्ञान और सच्चे चारित्र की प्राप्ति कराने वाला और

श्रीमज्जिनागमे प्रोक्तो ब्रह्मासौ पञ्चधा ध्रुवम्। मोक्षे तथाऽऽत्मनिज्ञाने चारित्रे वृषभप्रभुः ॥२१॥
 अन्यथा न परो ब्रह्मा विद्यते भुवनत्रये। रागादिदूषितः कामी कथं देवो भवेद्भुवि ॥२२॥
 यस्तु रागादिभिर्मुक्तो लोकालोकप्रकाशकः। केवलज्ञानसच्चक्षुः स मे ब्रह्मा वृषध्वजः ॥२३॥
 यो जानात्यखिलं जगत्त्रयमिदं सत्केवलज्ञानभाक् भव्याम्भोरुहभास्करोतिचतुर संसारनिस्तारकः।
 ब्रह्मा श्रीवृषभेश्वरो गुणनिधिः स्वर्गापवर्गप्रदः स स्यान्मे भवशान्तये शुचितरो देवेन्द्रवर्यैः स्तुतः ॥२४॥
 इति कथाकोशे लौकिकस्य ब्रह्मणः कथा समाप्ता।

३९. परिग्रहाद्भीतस्य धनदत्तस्य कथा

नत्वा निर्ग्रन्थनाथेशं श्रीजिनं परमेश्वरम्। ग्रन्थोत्पन्नं भयं प्राप्तौ भ्रातरौ तत्कथां ब्रुवे ॥१॥
 दशार्णविषये रम्ये पुरे चैकरथाभिधे। धनदत्तोभवच्छ्रेष्ठी धनदत्ता प्रिया तयोः ॥२॥
 संजातौ धनदेवाख्यधनमित्रौ सुतोत्तमौ। धनमित्राभवत्पुत्री स्वरूपगुणमण्डिता ॥३॥
 धनदत्ते मृते तस्मिन्तौ पुत्रौ पापकर्मणा। दारिद्र्येण महाकष्टं पीडितौ शर्महारिणा ॥४॥

आत्मा को निजस्वरूप में स्थिर करने वाला है। वह अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन अवस्थाओं से पाँच प्रकार का है। इनके सिवा संसार में कोई ब्रह्मा नहीं है क्योंकि राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया लोभ आदि दोषों से युक्त कभी ब्रह्मा-देव हो ही नहीं सकता किन्तु जो इन रागादि दोषों से रहित हैं, लोक और अलोक जानने वाले हैं और केवलज्ञानरूपी नेत्र से युक्त हैं वे ही ऋषभ भगवान् मेरे सच्चे ब्रह्मा हैं ॥१८-२३॥

वे परम पवित्र आदिनाथ जिनेन्द्र मुझे संसार के दुःखों से छुड़ाकर शांति प्रदान करें, जो भव्यजनरूपी कमलों को प्रफुल्लित करने के लिए सूरज के समान हैं, संसार-समुद्र पार करने वाले हैं, गुणों के समुद्र हैं, स्वर्ग और मोक्ष का पवित्र सुख देने वाले हैं, इंद्रादि देवों द्वारा पूज्य हैं और केवलज्ञान द्वारा सारे संसार के जानने और देखने वाले हैं ॥२४॥

३९. परिग्रह से डरे हुए दो भाइयों की कथा

धन, धान्य, दास, दासी, सोना, चाँदी आदि जो संसार के जीवों को तृष्णा के जाल में फँसाकर कष्ट पर कष्ट देने वाले हैं ऐसे परिग्रह से माया, ममता छोड़ने वाले जो साधु-सन्त हैं, उनसे भी जो ऊँचा हैं, जिनके त्याग से आगे त्याग की कोई सीमा नहीं, ऐसे सर्वश्रेष्ठ जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर परिग्रह से डरे हुए दो भाइयों की कथा लिखी जाती है ॥१॥

दशार्ण देश में बहुत सुन्दर एकरथ नाम का एक शहर था। उसमें धनदत्त नाम का सेठ रहता था। इसकी स्त्री का नाम धनदत्ता था। इसके धनदेव और धनमित्र ऐसे दो पुत्र और धनमित्रा नाम की सुन्दर लड़की थी ॥२-३॥

धनदत्त की मृत्यु के बाद इन दोनों भाइयों के कोई ऐसा पापकर्म का उदय आया, जिससे